The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 5 | December 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

शिक्षक की बदलती भूमिका: डिजिटल युग में

अभय सिंह

सहा. आचार्य, शिक्षक शिक्षा संकाय, नंदकिशोर सिंह पीजी कॉलेज, धनुहा, चाका, नैनी, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 12/11/2025
स्वीकृति तिथि: 22/12/2025
प्रकाशनतिथि: 31/12/2025

मुख्य शब्द: डिजिटल युग, संचार प्रौद्योगिकी, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस।

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति एवं भौतिकतावादी जीवनशैली के प्रभाव में मानवीय मूल्यों में गिरावट एक गम्भीर सामाजिक चुनौती बन चुकी है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों का समग्र विकास भी है। ऐसे में मूल्यपरक शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है, जो विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, न्याय, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का संवर्धन करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा, नैतिक विकास की प्रक्रिया तथा इन दोनों के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि विद्यालयी तथा सामाजिक स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा किस प्रकार सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मूल्यपरक शिक्षा न केवल नैतिक निर्णय क्षमता को विकसित करती है, अपितु व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सामाजिक सौहार्द को भी सुदृढ़ करती है। यदि शैक्षिक नीतियों एवं पाठ्यक्रमों में इसे प्रभावी रूप से एकीकृत किया जाए, तो समाज में नैतिक गिरावट की प्रवृत्ति को नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे एक उत्तरदायी, संवेदनशील एवं मूल्यनिष्ठ नागरिक का निर्माण संभव हो सकेगा।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति और विकास का मूल आधार होती है। समय, परिस्थितियों और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा की प्रकृति तथा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाएँ निरंतर परिवर्तनशील रही हैं। वर्तमान समय को डिजिटल युग कहा जाता है, जहाँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। शिक्षा भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल संसाधनों की बढ़ती उपलब्धता ने शिक्षण के पारंपरिक स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित कर दिया है।

डिजिटल युग में ज्ञान अब केवल पुस्तकों या कक्षा तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह एक क्लिक की दूरी पर उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान के संप्रेषक तक सीमित न रहकर एक मार्गदर्शक, सुगमकर्ता, प्रेरक तथा मेंटर के रूप में विकसित हुई है। शिक्षक अब विद्यार्थियों को सही जानकारी का चयन, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा नैतिक मूल्यों के विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, तकनीकी दक्षता, नवाचार और आजीवन अधिगम शिक्षक की नई पहचान बन गए हैं।

अतः डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, ताकि शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सके।

2. डिजिटल युग की अवधारणा

डिजिटल युग से आशय उस आधुनिक कालखंड से है जिसमें सूचना, ज्ञान और संचार का मुख्य आधार डिजिटल तकनीक बन चुका है। कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल उपकरण, क्लाउड तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सोशल मीडिया जैसे साधनों ने मानव जीवन की कार्यप्रणाली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इस युग में सूचना का सृजन, संग्रहण, प्रसारण और उपयोग अत्यंत तीव्र, सरल और सुलभ हो गया है। परिणामस्वरूप समाज, अर्थव्यवस्था और शिक्षा के स्वरूप में मूलभूत परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

Crossponding author: abhay4280gmail@com

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल युग ने पारंपरिक शिक्षण सीमाओं को तोड़ते हुए ई-लर्निंग, ऑनलाइन कक्षाएँ, वर्चुअल शिक्षण मंच, डिजिटल पुस्तकालय और मल्टीमीडिया संसाधन को बढ़ावा दिया है। अब शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि "कभी भी और कहीं भी सीखने" की अवधारणा साकार हो गई है। डिजिटल युग में ज्ञान स्थिर न होकर निरंतर अद्यतन होने वाला बन गया है, जिससे आजीवन अधिगम की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग ने शिक्षार्थियों को सक्रिय भागीदारी, आत्मनिर्भरता और वैयक्तिक गति से सीखने का अवसर प्रदान किया है। इस प्रकार डिजिटल युग न केवल तकनीकी परिवर्तन का प्रतीक है, बल्कि यह शिक्षा के उद्देश्य, संरचना और प्रक्रियाओं में क्रांतिकारी बदलाव का द्योतक भी है।

3. पारंपरिक युग में शिक्षक की भूमिका

पारंपरिक युग की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को ज्ञान का प्रमुख स्रोत और कक्षा का केंद्रीय पात्र माना जाता था। शिक्षण की प्रक्रिया मुख्यतः पुस्तकों, पाठ्यक्रम और व्याख्यान पद्धति पर आधारित होती थी, जिसमें शिक्षक की भूमिका सक्रिय और विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत निष्क्रिय होती थी।

शिक्षक का मुख्य कार्य निर्धारित पाठ्यक्रम को समयबद्ध रूप से पूर्ण कराना, विषयवस्तु की व्याख्या करना तथा विद्यार्थियों को परीक्षाओं के लिए तैयार करना होता था। ज्ञान का संप्रेषण एकतरफा होता था, जिसमें प्रश्न-उत्तर एवं संवाद की सीमित संभावनाएँ रहती थीं।

पारंपरिक युग में शिक्षक अनुशासनकर्ता की भूमिका में भी महत्त्वपूर्ण होते थे। विद्यालयी वातावरण में नियमों का पालन, समय-सारणी का अनुशासन और कक्षा की व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्रमुख जिम्मेदारियों में शामिल था। इसके अतिरिक्त, शिक्षक नैतिक मूल्यों, सामाजिक आचरण और संस्कारों के संवाहक के रूप में भी कार्य करते थे। गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिक्षक को अत्यधिक सम्मान प्राप्त था और उनके निर्देशों को अंतिम सत्य के रूप में स्वीकार किया जाता था।

मूल्यांकन प्रणाली भी शिक्षक-केंद्रित होती थी, जिसमें लिखित परीक्षाओं और स्मरण-आधारित प्रश्नों को अधिक महत्व दिया जाता था। इस प्रकार, पारंपरिक युग में शिक्षक की भूमिका स्थिर,

Crossponding author: abhay4280gmail@com

अधिकारपूर्ण और पाठ्यक्रम-केंद्रित रही, जो उस समय की सामाजिक एवं शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल थी।

4. डिजिटल युग में शिक्षक की बदलती भूमिका

डिजिटल युग ने शिक्षक की भूमिका को एक नई दिशा प्रदान की है, जो बहुआयामी और तकनीकी रूप से सशक्त बन गई है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- ज्ञान प्रदाता से सुगमकर्ता तक: शिक्षक अब केवल जानकारी देने वाले नहीं रहे, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाने वाले सुगमकर्ता बन गए हैं।
- मार्गदर्शक और मेंटर: वे विद्यार्थियों को सूचना चयन, करियर मार्गदर्शन और व्यक्तिगत विकास में सहयोग प्रदान करते हैं।
- तकनीकी दक्षता के विकासकर्ता: शिक्षक अब डिजिटल कौशल, तकनीकी समझ और संसाधनों के सुरक्षित उपयोग की क्षमता विकसित करते हैं।
- रचनात्मकता और नवाचार के प्रेरक: डिजिटल टूल्स के माध्यम से वे नवोन्मेषी सोच और परियोजना-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देते हैं।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रति संवेदनशील: वे विद्यार्थियों की रुचियों, क्षमताओं और गति के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करते हैं।
- सहयोगात्मक अधिगम के प्रोत्साहक: ऑनलाइन मंचों एवं समूह गतिविधियों द्वारा टीमवर्क और संवाद को बढ़ावा देते हैं।
- मूल्यांकन में नवाचारकर्ता: पारंपरिक परीक्षाओं के साथ-साथ ऑनलाइन क्विज, ई-पोर्टफोलियो और सतत मूल्यांकन अपनाते हैं।
- आजीवन अधिगम का आदर्श: वे स्वयं भी निरंतर सीखते हुए प्रेरणास्रोत के रूप में उभरते हैं।

5. शिक्षक: एक सुगमकर्ता के रूप में

डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका ज्ञान संप्रेषक से हटकर सीखने की प्रक्रिया के सुगमकर्ता के रूप में परिवर्तित हो गई है। आज ज्ञान के विविध स्रोत — जैसे इंटरनेट, ई-पुस्तकें, शैक्षिक वीडियो और ऑनलाइन मंच — सहज रूप से उपलब्ध हैं। ऐसे में शिक्षक का कार्य केवल

जानकारी देना नहीं, बल्कि **सीखने की दिशा तय करना और विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगम** की ओर प्रेरित करना बन गया है।

एक सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक विद्यार्थियों की रुचियों, क्षमताओं और सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए **व्यक्तिगत मार्गदर्शन** प्रदान करते हैं। वे प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने और समस्या-समाधान **की प्रक्रिया में सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं। इसके माध्यम से शिक्षक** आत्मनिर्भरता, आलोचनात्मक चिंतन और आजीवन अधिगम की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं — जो डिजिटल युग की आवश्यकताएँ हैं।

6. शिक्षक: मार्गदर्शक और मेंटर के रूप में

डिजिटल युग में सूचनाओं की अधिकता के कारण विद्यार्थियों के लिए सही, उपयोगी और विश्वसनीय ज्ञान का चयन **चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसे में शिक्षक मार्गदर्शक और मेंटर** के रूप में सूचना की छँटाई, **डिजिटल नैतिकता और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों** को जागरूक करते हैं।

शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं करियर संबंधित निर्णयों में वे विद्यार्थियों को दिशा और प्रेरणा प्रदान करते हैं। एक मेंटर के रूप में शिक्षक विद्यार्थियों की छिपी क्षमताओं को पहचानकर उन्हें आत्मविश्वास, **सकारात्मक दृष्टिकोण और** लक्ष्य निर्धारण की ओर प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार, **डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका केवल एक ज्ञानदाता नहीं, बल्कि** चरित्र-निर्माता और सक्षम जीवन-**निर्देशक** के रूप में उभर रही है।

7. तकनीकी दक्षता और शिक्षक

डिजिटल युग में शिक्षक की प्रभावी भूमिका के लिए तकनीकी दक्षता अनिवार्य हो गई है। आधुनिक शिक्षण-**अधिगम प्रक्रिया में** ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, लर्निंग **मैनेजमेंट सिस्टम**, शैक्षिक ऐप्स, मल्टीमीडिया सामग्री और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित उपकरणों **का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में शिक्षक का तकनीकी रूप से दक्ष होना** समय की आवश्यकता बन गया है।

तकनीकी दक्षता के माध्यम से शिक्षक शिक्षण को अधिक रोचक, सहभागितापूर्ण और विद्यार्थी-केंद्रित बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, तकनीक के सुरक्षित एवं नैतिक प्रयोग की शिक्षा देकर शिक्षक विद्यार्थियों को डिजिटल साक्षर नागरिक बनने में सहयोग करते हैं। निरंतर प्रशिक्षण एवं अभ्यास के माध्यम से शिक्षक स्वयं को अद्यतन रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सक्षम होते हैं।

8. प्रमुख डिजिटल शिक्षण पद्धतियाँ

- ई-लर्निंग (E-Learning): इंटरनेट आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से कभी भी, कहीं भी सीखने की सुविधा प्रदान करता है।
- ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning): पारंपरिक कक्षा शिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण का संतुलित संयोजन है।
- फ्लिप्ड क्लासरूम (Flipped Classroom): विद्यार्थी घर पर डिजिटल सामग्री से सीखते हैं और कक्षा में चर्चा व गतिविधियाँ करते हैं।
- मूक्स (MOOCs): बड़े स्तर पर निःशुल्क या सशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं।
- वर्चुअल कक्षा (Virtual Classroom): वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से वास्तविक कक्षा जैसा अनुभव प्रदान करती है।
- मोबाइल लर्निंग (Mobile Learning): स्मार्टफोन और टैबलेट के माध्यम से लचीला और त्वरित अधिगम संभव बनाती है।
- प्रोजेक्ट आधारित डिजिटल अधिगम: समस्या-समाधान और रचनात्मकता को ऑनलाइन संसाधनों के उपयोग से बढ़ावा देता है।
- एडैप्टिव लर्निंग (Adaptive Learning): विद्यार्थियों की क्षमता एवं सीखने की गति के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करता है।

9. शिक्षक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने शिक्षा के क्षेत्र में नई क्रांति का आरंभ किया है, जिससे शिक्षक की भूमिका और अधिक प्रभावी एवं समर्थ बनी है। AI आधारित तकनीकों — जैसे पर्सनलाइज्ड लर्निंग सिस्टम, ऑटोमेटेड मूल्यांकन, स्मार्ट कंटेंट और शैक्षिक चैटबॉट्स — ने

Crossponding author: abhay4280gmail@com

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, सटीक एवं अनुकूल बनाया है।

AI की सहायता से विद्यार्थी की सीखने की गति, रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षण संभव हुआ है। शिक्षक इन टूल्स के विवेकपूर्ण एवं नैतिक उपयोग के माध्यम से न केवल समय-साध्य कार्यों को सरलीकृत करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाते हैं।

AI शिक्षकों का विकल्प नहीं, बल्कि उनका सहायक है — यह समझ विद्यार्थियों को देने में भी शिक्षक की भूमिका निर्णायक है।

10. मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका

डिजिटल युग में मूल्यांकन केवल अंतिम परीक्षा तक सीमित न रहकर सतत एवं समग्र प्रक्रिया बन गया है। शिक्षक अब ऑनलाइन क्विज, असाइनमेंट, परियोजनाएँ, प्रस्तुतीकरण एवं ई-पोर्टफोलियो जैसे नवाचारपूर्ण माध्यमों द्वारा विद्यार्थियों की वास्तविक प्रगति का आकलन करते हैं।

डिजिटल मूल्यांकन त्वरित प्रतिक्रिया की सुविधा देता है, जिससे विद्यार्थी अपनी कमियों को पहचानकर उनमें सुधार कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षक निष्पक्ष, पारदर्शी और विकासोन्मुख मूल्यांकन प्रणाली को क्रियान्वित करते हैं।

11. डिजिटल युग में शिक्षक के समक्ष चुनौतियाँ

1. तकनीकी दक्षता का अभाव: सभी शिक्षक डिजिटल टूल्स में समान रूप से दक्ष नहीं होते।
2. डिजिटल विभाजन: संसाधनों की असमान उपलब्धता शिक्षण में असमानता उत्पन्न करती है।
3. प्रशिक्षण व तकनीकी समर्थन की कमी: सतत विकास हेतु संस्थागत सहायता का अभाव।
4. समय प्रबंधन: डिजिटल सामग्री निर्माण और प्रबंधन से कार्यभार बढ़ता है।
5. साइबर सुरक्षा व गोपनीयता: डेटा की सुरक्षा एवं साइबर खतरों से निपटना।

Crossponding author: abhay4280gmail@com

6. मानवीय संपर्क में कमी: सामाजिक व भावनात्मक जुड़ाव सीमित हो जाता है।
7. अत्यधिक तकनीक निर्भरता: मानवीय मूल्यों व नैतिक पक्ष की उपेक्षा की आशंका।

12. चुनौतियों से निपटने की रणनीतियाँ

- सतत प्रशिक्षण: शिक्षकों हेतु व्यावसायिक विकास कार्यक्रम अनिवार्य बनाए जाएँ।
- डिजिटल अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण: सभी विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- साइबर सुरक्षा जागरूकता: डेटा संरक्षण एवं सुरक्षित डिजिटल व्यवहार पर प्रशिक्षण।
- समय प्रबंधन कौशल: कार्य संतुलन हेतु स्मार्ट टूल्स एवं रणनीति अपनाई जाए।
- संवेदनशील शिक्षण दृष्टिकोण: मानवीय पक्ष बनाए रखते हुए संतुलित डिजिटल उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।

13. शिक्षक और समावेशी शिक्षा

डिजिटल युग में समावेशी शिक्षा की अवधारणा को साकार करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। तकनीकी संसाधनों के माध्यम से शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले, वंचित एवं विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला एवं वैयक्तिकीकृत बना सकते हैं।

ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, सहायक तकनीकें, स्क्रीन रीडर, अनुकूलित डिजिटल कंटेंट जैसी व्यवस्थाएँ समावेशी शिक्षण को सशक्त बनाती हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की विविध क्षमताओं एवं रुचियों के अनुसार भिन्नीकृत शिक्षण प्रदान करते हैं, जिससे समान अवसर, सहभागिता और आत्मसम्मान का वातावरण निर्मित होता है।

14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक है, जिसमें शिक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का केंद्रीय स्तंभ माना गया है। यह नीति शिक्षक की भूमिका को केवल पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे

नवाचारकर्ता, **मार्गदर्शक तथा आजीवन अधिगम करने वाले व्यक्तित्व के रूप में स्थापित** करती है।

नीति में तकनीकी दक्षता, **डिजिटल साक्षरता तथा समकालीन शिक्षण विधियों को शिक्षक शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है।** सतत व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development – CPD) पर विशेष बल दिया गया है, **जिसके अंतर्गत शिक्षकों को नियमित** प्रशिक्षण, **कार्यशालाओं एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से जोड़े जाने की व्यवस्था की गई है।**

इसके अतिरिक्त, **यह नीति बहुविषयक दृष्टिकोण,** अनुभवात्मक अधिगम तथा समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करती है, **जिससे शिक्षक** की भूमिका अधिक सृजनात्मक, उत्तरदायी एवं विद्यार्थी-**केंद्रित बनती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग के माध्यम से शिक्षक शिक्षण को अधिक सशक्त बना सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति** 2020 **शिक्षक को भविष्य उन्मुख एवं सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।**

15. भविष्य में शिक्षक की भूमिका

भविष्य में शिक्षक की भूमिका और अधिक व्यापक, गतिशील तथा उत्तरदायी होने वाली है। तीव्र तकनीकी विकास, **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा वैश्विक डिजिटल नेटवर्क के विस्तार के साथ शिक्षक केवल ज्ञान प्रदाता नहीं रहेंगे,** बल्कि शोधकर्ता, **नवप्रवर्तक तथा मार्गदर्शक के** रूप में उभरेंगे।

शिक्षक विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करेंगे, जिससे वे भविष्य की जटिल चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें।

भविष्य का शिक्षक तकनीक और मानवीय संवेदनाओं के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए शिक्षण को अधिक समावेशी एवं वैयक्तिकीकृत बनाएगा। आजीवन अधिगम, निरंतर कौशल **विकास तथा वैश्विक दृष्टिकोण शिक्षक की पहचान के अभिन्न अंग होंगे। इस प्रकार शिक्षक** ज्ञान-आधारित समाज के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएँगे।

Crossponding author: abhay4280gmail@com

16. शोध निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका में गुणात्मक एवं संरचनात्मक परिवर्तन हुआ है। शिक्षक अब केवल ज्ञान के संप्रेषक न होकर सीखने की प्रक्रिया के सुगमकर्ता, मार्गदर्शक, मेंटर तथा नवाचारकर्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं।

डिजिटल तकनीकों के उपयोग से शिक्षण अधिक लचीला, सहभागितापूर्ण एवं विद्यार्थी-केंद्रित हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म एवं डिजिटल संसाधनों ने शिक्षकों की कार्यक्षमता को सशक्त बनाया है। तथापि, तकनीकी दक्षता, प्रशिक्षण तथा अवसंरचना से संबंधित चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

शोध यह भी दर्शाता है कि तकनीक शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि उनकी भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने का माध्यम है। शिक्षक का मानवीय पक्ष—संवेदनशीलता, नैतिकता एवं प्रेरणा—डिजिटल युग में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। समुचित प्रशिक्षण, नीतिगत समर्थन एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षक डिजिटल परिवर्तन को सार्थक दिशा प्रदान कर सकते हैं।

17. निष्कर्ष

- डिजिटल युग ने शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन किए हैं।
- शिक्षक की भूमिका ज्ञानप्रदाता से सुगमकर्ता एवं मार्गदर्शक में परिवर्तित हुई है।
- तकनीक शिक्षक का विकल्प नहीं, बल्कि उसकी कार्यक्षमता को सशक्त बनाने का माध्यम है।
- डिजिटल शिक्षण से शिक्षा अधिक लचीली, सहभागितापूर्ण एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनी है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डिजिटल उपकरण शिक्षकों के सहायक के रूप में उभरे हैं।
- तकनीकी दक्षता अब शिक्षक की एक आवश्यक योग्यता बन चुकी है।
- डिजिटल युग में शिक्षक का मानवीय एवं नैतिक पक्ष और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

Crossponding author: abhay4280gmail@com

- समावेशी शिक्षा को साकार करने में डिजिटल तकनीक सहायक सिद्ध हो रही है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक के सतत व्यावसायिक विकास पर बल देती है।
- भविष्य में शिक्षक ज्ञान-आधारित, नवाचारी एवं मूल्य-केंद्रित समाज के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएँगे।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020). ***राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020***. नई दिल्ली।
2. UNESCO (2019). ***ICT in Education: A Critical Review***. UNESCO Publishing.
3. UNESCO (2021). ***Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education***. UNESCO Publishing.
4. Mishra, P., & Koehler, M. J. (2006). Technological Pedagogical Content Knowledge (TPACK). ***Teachers College Record***.
5. Selwyn, N. (2016). ***Education and Technology: Key Issues and Debates***. Bloomsbury.
6. Anderson, T. (Ed.). (2008). ***The Theory and Practice of Online Learning***. Athabasca University Press.
7. Bates, A. W. (2015). ***Teaching in a Digital Age***. Tony Bates Associates.
8. OECD (2018). ***The Future of Education and Skills: Education 2030***. OECD Publishing.
9. NCERT (2021). ***Digital Initiatives in School Education***. New Delhi.
10. Sharma, R. A. (2015). ***Educational Technology***. Meerut: R. Lall Book Depot.
11. Kumar, K. (2014). ***Politics of Education in Colonial India***. Routledge.
12. Siemens, G. (2005). Connectivism: A Learning Theory for the Digital Age. ***International Journal of Instructional Technology***.

Crossponding author: abhay4280gmail@com

13. Salmon, G. (2013). ***E-moderating: The Key to Teaching and Learning Online***. Routledge.
14. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2022). ***Digital Education Initiatives in India***.
15. Dwivedi, A., & Pandey, S. (2020). Digital Pedagogy and Teacher's Role. ***Indian Journal of Education***.
16. Bhattacharya, K. (2018). Inclusive Education and Technology. ***Journal of Educational Studies***.